कश्मीर समस्या : समस्या व निवारण

डॉ. दीपक कुमार
पोस्ट डॉक्ट्रेट फैलो
के.एम.जी.जी. पी.जी. कॉलेज
बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

डॉ. किशोर कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)
के.एम.जी.जी. पी.जी. कॉलेज
बादलपुर, गौतम बुद्ध नगर

जब भारत–पाक सम्बंध या इन दोनों राष्ट्रों के बीच के विवादों का जिक्र किया जाता है तब अनगिनत पहलू सामने उभर कर आते है। विवादित मुददे चाहें जो भी हो चाहे वह जल बटवारें से सम्बधित हो, सरक्रीक या सियाचिन मुददा हो या सबसे अहम विषय जो दोनों देशों की आजादी के साठ वर्षों के बाद भी टस से मस नहीं हुआ यानि–कश्मीर मुददा हो, यदि बारीकी से इन मुददों की जड़ तक जाया जाए तो समस्या केवल एक ही दिखाई देती है वह है–आपसी तालमेल का ना होना। कहीं न कहीं वह कटुता जो विभाजन का कारण थी, आज भी सभी वर्तमान समस्याओं का कारण बनी हुई है।

इन सभी समस्याओं के बावजूद कश्मीर का मुददा ही केवल वास्तविक मुददा है। जिसके सुलझते ही ये सभी मुददे अपने आप सुलझ जाऐंगें। कश्मीर समस्या के अपने–अपने ढंग से समाधान निकाले जा रहे हैं। परन्तु जनता की समस्याओं पर कभी कोई गौर नहीं करना चाहता। कश्मीर में समस्या यह है कि मात्र 15,853 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्र की कश्मीर घाटी को पूरे राज्य जम्मू–कश्मीर तथा लददाख का प्रतिनिधि माना जाता है। अतः कोई भी फार्मूला या समाधान इस समस्या का हल नहीं निकाल पाता।

निसन्देह वर्तमान भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा असामान्य रूप से विभाजित प्रारूप तो कश्मीर समस्या के हल न निकलने का कारण है ही परन्तु वह अतीत अध्याय जिसके कारण भारत–पाक विभाजन हुआ वह भी इस उलझी हुई समस्या का एक महत्वपूर्ण कारक है।

विभाजन के साथ ही दोनों देशों भारत तथा पाकिस्तान के बीच हमेशा रहने वाली घृणा, अविश्वास, सन्देह तथा भय उत्पन्न हो गया। पाकिस्तान के उच्च वर्ग (राजनैतिक, सैनिक तथा असैनिक) की यह विचारधारा बन गयी कि भारत कभी उन्हें शांति से रहने नहीं देगा तथा मौका मिलते ही उन्हें बर्बाद करने का प्रयास करेगा भारतीय उच्च वर्ग की भी यही धारणा थी जिस कारण दोनों ही देशों ने एक–दूसरे से ताकतवर बनने के लिए अपनी सैनिक क्षमताओं को बढाया।

पाकिस्तान की असंतुलित राजनीतिक दशा भी दोनों देशों के बीच तनाव के लिए जिम्मेदार थी तथा है भी, मुस्लिम लीग जो बडे जमींदारों, बुद्धिजीवियों, किसानों, मजदूरों की पार्टी थी स्वतंत्रता के बाद उसने पाकिस्तान को गति प्रदान की, किसी भी राजनीतिक पार्टी या राजनीतिक संगठन ने आजादी (पाकिस्तान) के बाद वह दर्जा या शक्ति प्राप्त नहीं की जो मुस्लिम लीग (1954 तक) के पास थी तथा यही पार्टी पाकिस्तान के राजनैतिक पक्ष को चला रही थी-तथा इसका केन्द्र व राज्यों (प्रांतों) पर लगभग एकाधिकार थी।

लियाकत अली खां जो पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री थे (अगस्त 47 अक्टूबर 1951) उन्होंने कहा कि "मैं सदा स्वयं को लीग का प्रधानमंत्री समझता हूँ। मैं कभी भी अपने आप को संसदीय समिति द्वारा चुना हुआ प्रधानमंत्री नहीं समझता।" जिन्ना की मृत्यु तथा लियाकत अली की हत्या के बाद मुस्लिम लीग जनता को एक मजबूत कार्यक्रम या एक आकर्षक नेता देने में असफल रहीं। अतः उसने प्रांतीय राजनीतिज्ञों तथा मुददों (Local Politicans and local issues) को वरीयता देना प्रारंभ किया। उस वक्त पाकिस्तानी जनता ग्रामीणी परिवेश वाली तथा

Scanned by CamScanner